# हिन्दी साहित्य

# HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL8**

| निर्धारित समय: तीन घंटे<br>*Time allowed: Three Hours* | अधिकतम अंक: 250<br>*Maximum Marks: 250* |
|---|---|

नाम (Name): अनुपम जारवड़

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एव दिनांक (Test No. & Date): 8 / 8/10/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 0 9 5 5 3 7

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Anupa

## Question Paper Specific Instructions

***Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:***

*There are **Five** questions.*

*Candidate has to attempt all **FIVE** questions.*

*The number of marks carried by a question/part is indicated against it.*

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

*Word limit in questions, if specified, should be adhered to.*

*Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.*

*Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.*

बहुत अच्छा

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 141½ टिप्पणी (Remarks):

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

*Copyright – Drishti The Vision Foundation*

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजियेः 10 × 5 = 50

(क) सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघारिया, अनँत दिखावनहार।।

संदर्भ व प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ निर्गुण ज्ञानाश्रयी धारा के प्रमुख स्तम्भ कबीर द्वारा रचित है। इसे पं. श्यामसुंदर दास ने संकलित किया है। (कबीर-दोहावली) - 'गुरुदेव कौ अंग' से उद्धृत हैं। कबीर अनभै साँचा के कवि हैं। यहाँ पर गुरु ज्ञान की महिमा का वर्णन किया है।

व्याख्या :- कबीर कहते हैं कि सतगुरु की कृपा से उनका उद्धार हुआ है। उनकी अनंत कृपा द्वारा कबीर कृतज्ञ भाव से गुरु की महिमा का बखान कर रहे हैं। कबीर कहते हैं कि गुरु ने उनकी आँखे खोल दी तथा असीम से उनका साक्षात्कार करवा दिया है।

यहाँ कबीर का सूफी दर्शन दिखाई देता है। जिसमें गुरु के ज्ञान से अनंत अर्थात ईश्वर की प्राप्ति संभव है।

विशेष :- 1) प्रस्तुत पंक्तियाँ दर्शन के कारण महत्व रखती हैं।
2) गुरु को कबीर ने ईश्वर से ऊँचा स्थान दिया है- "बलिहारि गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।"


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3) दोहा छंद प्रयुक्त किया है। मात्र 48 मात्राओं के छंद से असीम की गहराई तक पहुँचने का सामर्थ्य केवल कबीर में है।

4) लोकभाषा के समर्थक कबीर सधुक्कड़ी भाषा में लिख रहे हैं।

5) मुक्तक शैली

6) अनंत शब्द में यमक अलंकार है।
यह आज के युग में शिक्षा के व्यवसायीकरण में गुरु की महत्ता को याद दिलाता है अतः यह आज भी प्रासंगिक है।

अच्छा

6/10


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) काहे को रोकत मारग सूधो?
सुनहु मधुप! निर्गुन-कंटक तें राजपंथ क्यो रुँधो?
कै तुम सिखै पठाए कुब्जा, कै कही स्यामघन जू धौं।
बेद पुरान स्मृति सब ढूँढ़ौ, जुवतिन जोग कहूं धौं?
ताको कहा परेखो कीजै जानत छाछ न दूधो।
सूर मूर अक्रूर गए लै ब्याज निबेरत उधो।।

संदर्भ - प्रसंग :- यह पंक्तियाँ सूरदास के 'भ्रमरगीतसार' (संकलन - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल) से उद्धृत हैं।

कृष्णकाव्यधारा के स्तम्भ सूरदास यहाँ गोपियों के विरह तथा उद्धव को उलाहना देना वर्णित कर रहे ~~हैं~~ हैं।

व्याख्या :- गोपियाँ उद्धव से पूछती हैं कि तुम हमारा मार्ग क्यों रोक रहे हो। उद्धव को भ्रमर कहकर संबोधित करते हुए गोपियाँ कहती हैं कि क्या यह निर्गुण का पाठ तुम्हें कुब्जा ने पढ़ाया है ~~या~~ या ~~फिर~~ फिर श्रीकृष्ण ने स्वयं यह कहा है। वेदों-पुराणों व स्मृतियों में युवतियों के लिए योग कहीं भी वर्णित नहीं है।

अक्रूर पहले ही श्रीकृष्ण को लेकर चले गये और अब तुम ब्याज स्वरूप यह


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

योग का पाठ पढ़ा रहे हो। क्या तुम यह नहीं जानते की दूध को छोड़कर छाछ कौन पियेगा।

विशेष :- 1) यहाँ पर भावप्रेरित वक्रता के द्वारा गोपियाँ ज्ञानमार्ग पर प्रहार करती हैं।

2) कुब्जा के प्रति असूया संचारी भाव है।

3) उद्धव को उपालंभ के कारण 'मधुप' कहकर संबोधित किया है।

4) सूरदास की ब्रजभाषा प्रारंभिक होने के बावजूद पूर्णता लिये हुए है। यहाँ पर व्यंजकता व माधुर्य दर्शनीय है।

यह पंक्तियाँ दर्शन व सच्चे प्रेम की द्योतक हैं। प्रेम के स्वरूप पर यहाँ से प्रेरणा वर्तमान में भी प्रासंगिक है।

Good

6/10


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरै भौन में करत हैं, नैननु ही सों बात।।

संदर्भ-प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ समाहार क्षमता व 'गागर में सागर' भरने वाले बिहारी की हैं। यह 'बिहारी सतसई' नाम से जगन्नाथदास रत्नाकर द्वारा संकलित है।

यहाँ पर भाव-अनुभाव को बिहारी नायिका के विभिन्न भावों से प्रदर्शित कर रहे हैं।

व्याख्या :- नायिका नायक के समक्ष सभा भवन में सबके सामने अपने नयनों के माध्यम से ही सारी अभिव्यक्ति करती है वह कहती है, फिर मना करती है, रीझती है और अगले क्षण ही खीझ जाती है। मिलन के भाव से खिलती है तथा अगले ही क्षण लज्जा का भाव प्रदर्शित करती है। इस प्रकार सिर्फ नयनों से ही वार्तालाप हो रहा है।

विशेष :- 1) रीतिकालीन सौंदर्य व दरबारी रसिकता का वर्णन किया गया है।
2) समाहार क्षमता दर्शनीय है। एक ही वाक्य में व सात क्रियाओं का संयोजन ही उन्हें सर्वश्रेष्ठ रीतिकालीन कवि बनाता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3) ब्रजभाषा को काव्यभाषा के उत्कृष्ट पर पहुँचाने का कार्य बिहारी ने किया।

4) दोहा छंद का प्रयोग किया है जो मात्रिक छंद है।

5) मुक्तक रचना का अंश है।

यह प्रेम आमजन का प्रेम है तथा आज भी इसी रूप में देखा जा सकता है।

6/10


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ-प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की रचना 'भारत-भारती' से उद्धृत हैं।

यहाँ पर गुप्त जी भारत-भूमि के गौरवशाली अतीत का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या :- गुप्त जी प्रश्नवाचन शैली में पूछ रहे हैं कि इस संसार का गौरव व सम्पूर्ण ~~ब्रह्माण्ड~~ प्रकृति का पुण्य स्थान कहाँ पर है अर्थात् भारतभूमि ही वह स्थान है। हिमालय जैसा महान व सुन्दर पर्वत इसके ऊपर फैला हुआ है। गंगाजल भी इसी देश में बहता है। इसी जगद्गुरु भारतभूमि का गौरव सम्पूर्ण जगत में श्रेष्ठतर है। यह ऋषि-मुनियों की भूमि है जिसे भारतवर्ष के नाम से संबोधित किया जाता है।

विशेष :- 1) सांस्कृतिक-राष्ट्रीय गौरव से ओतप्रोत पंक्तियाँ स्वतंत्रता-संग्राम में प्रेरित करने वाली थी।
2) भाषा साधारण परंतु प्रवाह के कारण उत्कृष्ट प्रभाव पैदा करती है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3) चतुष्पदी छंद का प्रयोग

4) प्रश्नवाचक शैली

यह पंक्तियाँ आज वैश्वीकरण की अंधी दौड़ में भारत-वर्ष के ~~गौरवशाली~~ इतिहास का स्मरण कराती हैं।

6/10


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ-प्रसंग - यह पंक्तियाँ 'महाप्राण' सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा रचित 'राम की शक्तिपूजा' कविता से संकलित हैं। इसका संकलन रामविलास शर्मा ने 'राग-विराग' में किया है।

यहाँ पर राम की शक्ति आराधना के पीछे का वर्णन प्रकृति के माध्यम से किया गया है।

व्याख्या :- विराट बिंबों के निर्माण द्वारा निराला कहते हैं कि अमावस्या की रात्रि गहन अंधकार को जन्म दे रही है। इस अंधकार से भयभीत होकर ~~दिशाओं~~ दिशा का ज्ञान भी नहीं हो पा रहा। चारों पवन भी स्तब्ध होकर स्थिर हैं। यह विशाल समुद्र पीछे से गरज रहा है।

यहां धरती शान्त है जिससे ज्ञात होता है कि यह ध्यान से सब देख रही है। केवल जलती मशाल ही इस अंधकार का सामना करती हुई प्रतीत होती है।

विशेष :- 1) प्रस्तुत पंक्तियाँ विराट व भयानक बिंबों की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

2) उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग अंतिम पंक्ति में।

3) निराला ने तत्सम्मी शब्दावली के साथ खड़ी बोली हिन्दी को काव्यभाषा के उत्कर्ष पर पहुँचाया है।

यह पंक्तियाँ प्रकृति को उद्दीपन विभाव के रूप में प्रयोग कर रही हैं।

पंक्तियाँ निराला के भीतर संघर्ष एवं अंधेरे को भी उद्घाटित करती हैं।

$5\frac{1}{2}$ / 10



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) पीछै लागा जाई था, लोक वेद के साथि,
आगे तैं सतगुर मिल्या, दीपक दीया हाथि।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ-प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ निर्गुण ज्ञानाश्रयी धारा के रचनाकार कबीर द्वारा रचित हैं। इसका संकलन पं. श्यामसुंदर दास द्वारा कबीर ग्रंथावली में किया गया है यह 'गुरुदेव कौ अंग' भाग से उद्धृत है।

कबीर कह रहे हैं कि सतगुरु के मिलने से उसका उद्धार हुआ है।

व्याख्या :- कबीर कह रहे हैं कि वह ज्ञान की खोज में व्यस्त था। वह वेदों की ओर भी प्रवृत हुआ। परंतु आगे चलकर जब गुरु से मिलन हुआ, तब उसे असीम की प्राप्ति हुई। उसने ज्ञानरूपी दीपक हाथ में देकर मेरा उद्धार किया।

विशेष :-
1) सूफी दर्शन के अनुरूप गुरु की महिमा व आवश्यकता पर बल दिया गया है।
2) वेदों की अपेक्षा गुरु ज्ञान की महत्ता उनके शास्त्रवाद के विरोध को उजागर करती है।
3) कबीर लोकभाषा के समर्थक हैं, खड़ी बोली की


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

आरंभिक स्वरूप दिखाई देता है।

4) दोहा छंद (मात्रिक छंद) व मुक्तक रचना

5) साखियों का प्रयोग कबीर के जीवन अनुभव पर बल देता है।

गुरु ज्ञान की महत्ता शाश्वत आवश्यकता है इसलिए यह पंक्तियाँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं।

6/10



Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) चढ़ा असाढ़ गँगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।
धूम स्याम धौरे घन धाए। सेत धुजा बगु पाँति देखाए।
खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरिसै घन घोरा।
अद्रा लाग बीज भुइँ लेई। मोहि पिय बिनु को आदर देई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ 'प्रेम की पीर' के ~~कवि~~ रचनाकार मलिक मुहम्मद जायसी की रचना 'पद्मावत' के 'नागमति वियोग खण्ड' से उद्धृत हैं। यह रचना श्यामसुंदर दास द्वारा संकलित है।

नागमती

यहाँ पर बारहमासा के अन्तर्गत नागमति के विरह का वर्णन किया गया है।

नागमती

व्याख्या:- जैसी ही आषाढ़ का महीना चढ़ा बादलों की गर्जना प्रारंभ हो गई। इससे विरह रूपी दुंद दल भी बजने लगा अर्थात् विरह और अधिक तीव्र हुआ। काले-सफेद बादलों ने दौड़ लगाना प्रारंभ कर दी। चारों तरफ बिजली चमक ~~बौने की कार्य~~ रही थी। बादलों ने वर्षा की बूंद बनकर बरसना प्रारंभ कर दिया।

जैसी अद्रा ~~बसन्त~~ नक्षत्र प्रारंभ हुआ बीज बोना प्रारंभ हुआ। परंतु इस मौसम में बिना प्रेमी व पति के बिना मेरा कोई आदर नहीं है।

विशेष:- 1) बारहमासा वर्णन का उत्कृष्ट उदाहरण है।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2) यहाँ पर नागमति का 'रानीपन' नहीं 'नारीपन' उजागर किया गया है

3) ठेठ अवधी की मिठास जायसी की पहचान है

4) अनुप्रास अलंकार तृतीय पंक्ति में प्रभावकारी है

यह नागमति का विरह सामाजिक भी है तथा प्रेम के ~~इच्छ~~ की असली परीक्षा का प्रतीक भी है इसी प्रेम के ~~मूल्यों~~ मूल्यों को पहचानने की आवश्यकता है

5½/10


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जिसे तुम समझे हो अभिशाप, जगत की ज्वालाओं का मूल-
ईश का वह रहस्य वरदान, कभी मत इसको जाओ भूल।
विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा स्पंदित विश्व महान,
यही दुख-सुख, विकास का सत्य यही भूमा का मधुमय दान।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ-प्रसंग:- यह पंक्तियाँ नाटककार, इतिहासकार, चिंतक व प्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसाद की कालजयी रचना 'कामायनी' के श्रद्धा सर्ग से उद्धृत हैं।

यहाँ श्रद्धा मनु को प्रेरित करती है, उसमें आशा का संचार करने की कोशिश करती है।

व्याख्या:- श्रद्धा मनु से कहती है कि तुम इस जीवन व प्रलय को अभिशाप मत समझो। यह जगत को नष्ट करने वाली अग्नि का मूल नहीं है केवल। यह जगत के स्वामी का वरदान है तुम इस बात को मत भूलो।

विषमता की वजह से यह विश्व पीड़ित है, इसलिए इस धरती का तुम्हें अभ्युत्थान करना है। इसी को अब तुम सुख-दुख व विकास का सत्य स्वीकार करो। इस प्रकृति का यही वरदान है।

विशेष:- 1) यह पंक्तियाँ राष्ट्रीय आंदोलन के समय की समस्याओं को लेकर चलती हैं। यहाँ पर मध्यम वर्ग को प्रेरित करने की कोशिश है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4 'विषमता' - से मार्क्सवादी चिंतन की प्रदर्शन हो रहा है।

3) प्रतीकात्मक का - मनु - मध्यम वर्ग का प्रतीक

4) इतिहास, कल्पना व वर्तमान की समस्याओं का संयोजन।

5) दर्शन के गूढ़ चिंतन को तत्समी भाषा से वर्णित किया है।

विषमता आज भी भारत को तथा सम्पूर्ण विश्व को स्पंदित कर रही है। इसलिए दिनकर जी कहते हैं - "शांति नहीं तब तक ~~जब तक~~ सुख भाग न नर का सम हो।"

6/10


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर जो? समाचार कछु पाए?
इक अति चतुर हुते पहिले ही, अरु करि नेह दिखाए।
जानी बुद्धि बड़ी, जुवतिन को जोग-सँदेस पठाए।।
भले लोग आगे के, सखि री ! परहित डोलत धाए।
वे अपने मन केरि पाइए जे हैं चलत चुराए।।
ते क्यों नीति करत आपुन जे औरनि रीति छुड़ाए?
राजधर्म सब भए सूर जहँ प्रजा न जायँ सताए।।

सन्दर्भ व प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ कृष्णकाव्यधारा के आधार स्तम्भ सूरदास के 'भ्रमरगीतसार' (सं.- आचार्य शुक्ल) से उद्धृत हैं।

यहाँ पर गोपियाँ योग का विरोध करते हुए उद्धव व श्रीकृष्ण को ~~अप~~ उलाहना दे रही हैं।

व्याख्या :-

गोपियाँ कहती हैं कि भगवान श्रीकृष्ण ने राजनीति पढ़ ली है। इसलिए यह उद्धव को योग का संदेश दिया गया है। पहले से ही चतुर थे। प्रेम का रास्ता दिखाया। इनकी बुद्धि की मिसाल देनी पड़ेगी जो युवतियों को योग-संदेश पढ़ाने का साहस किया।

एक गोपी अपनी सखी ~~साथी गोपियों~~ को संबोधित करते हुए कहती है कि वे अपने मन में झांककर देखें। खुद स्वयं तो नीति, राजकाज में पड़े हैं और दूसरों को दूसरा रास्ता दिखा रहे हैं। यह तो राजधर्म के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विपरीत है क्योंकि उसकी दायित्व तो प्रजा को हानि नहीं करना होना चाहिए।

विशेष:- 1) ज्ञानमार्ग पर व्यंग्य किया गया है।

2) भावप्रेरित वक्रता व वचनविदग्धता दृष्टव्य है।

3) सूरदास ने ब्रजभाषा को शैशवस्था में ही पूर्णता प्रदान की।

4) योग व प्रेम का संघर्ष काफी दार्शनिक महत्व रखता है।

6/10


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) शत घूर्णावर्त, तरंग- भंग उठते पहाड़,
जल राशि-राशि जल पर चढ़ता खाता पछाड़,
तोड़ता बन्ध-प्रतिसंध धरा, हो स्फीत-वक्ष
दिग्विजय-अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष।

संदर्भ प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ निराला की कविता 'राम की शक्ति पूजा' से उद्धृत हैं।

यहाँ पर शक्ति की आराधना के समय प्रकृति का वर्णन किया गया है।

व्याख्या:- सैंकड़ों तूफान चक्कर लगा रहे हैं तथा अनेकों तरंगे उठ रही हैं। यह जल राशि ऊपर उठ रही है तथा इससे पहाड़ टकराता है, तो पछाड़ खाकर गिर जाती है।

प्रतिक्षण सामर्थ्य बढ़ती चली जा रहा है तथा सारे बंधनों को तोड़ता हुआ, राम का वक्ष दिशाओं पर विजय पाकर चौड़ा हो रहा है।

विशेष:- 1) निराला के अनुसार छंद से मुक्ति ही कविता की मुक्ति है। इसलिए मौलिक छंद का सृजन

2) भाषा में ओजगुण

3) तत्समी भाषा प्रवाह को प्रखर करती है

4) प्रतीकात्मक रूप से निराला के भीतर का तथा स्वतंत्रता संग्राम का वर्णन हो रहा है।

अनेक (बहुवचन है)

5½/10



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजियेः $10 \times 5 = 50$

(क) नैना नीझर लाइया, रहट बहै निस जाम।
पपीहा ज्यूँ पिव पिव करौं, कब रु मिलहुगे राम।।

संदर्भ-प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ कबीर ग्रंथावली के 'विरह कौं अंग' से उद्धृत ली गई हैं।

। यहाँ पर राम - असीम के प्रतीक हैं तथा कबीर राम ~~की स्मृति~~ के विरह में विरक्त हैं।

व्याख्या:- आँखों से आँसुओं के झरने वहकर वे अब निर्झर हो गई हैं। जिस तरह पपीहा पिउ-पिउ करता रहा है उसी प्रकार कबीर ने भी राम का स्मरण किया। वे पूछ रहे हैं कि अब कब मिलन होगा।

यहाँ पर विरह प्रेमिका व लौकिक रूप में नहीं है। यह सूफी दर्शन के अन्तर्गत है।

विशेष:- 1) सूफी दर्शन में विरह को महत्वपूर्ण माना गया है।
2) प्रथम पंक्ति में अनुप्रास अलंकार
3) प्रतिबद्ध कवि हैं, इसलिए शिल्प पर ध्यान नहीं परंतु अनुभव की गहराई से प्रभाव पैदा किया है।
4। प्रकृति यही प्रयोग जायसी के यहाँ—
~~बरसे मेघा~~ फिर फिर रोई कोई नहीं बोला डोला



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

आधीरात विहंगम बोल"

6

10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) न्यायोचित सुख सुलभ नहीं
जब तक मानव-मानव को,
चैन कहाँ धरती पर, तब तक
शान्ति कहाँ इस भव को?
"जब तक मनुज-मनुज का यह
सुख-भाग नहीं सम होगा,
शमित न होगा कोलाहल,
संघर्ष नहीं कम होगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ-प्रसंग:- यह पंक्तियाँ राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के प्रखर ~~हस्त~~ हस्ताक्षर रामधारी सिंह दिनकर की 'कुरुक्षेत्र' से, उद्धृत हैं।

यहाँ पर समता पर बल देना युद्ध से बचने का उपाय बताया गया है।

व्याख्या:- जब तक सुख न्यायोचित नहीं, ~~तब~~ तब तक मानव को शान्ति व चैन नहीं मिलेगा। इस संसार में शांति नहीं होगी।

अर्थात् यह उपद्रव, कोलाहल ऐसे ही जारी रहेगा यदि समता ~~की~~ की स्थापना नहीं की गई। संघर्ष तभी रुकेगा जब समतामूलक समाज स्थापित होगा।

विशेष:- 1) मार्क्सवादी चिंतन उजागर हुआ है।
2) युद्ध की शाश्वत समस्या पर विचार
3) निराला की शक्ति की आराधना का भी यही उद्देश्य - 'अन्याय जिधर है उधर शक्ति'



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

5) ओजगुण व वीर रस

आज मनुष्य असमानताओं के कारण फिर से आतंकवाद जैसे सतत युद्ध से जूझ रहा है इसका समाधान इन पंक्तियों में है

6/10



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) बिलग जनि मानहु, ऊधो प्यारे!
वह मथुरा काजर की कोठरि जे आवहिं ते कारे।।
तुम कारे, सुफलकसुत कारे, कारे मधुप भँवारे।
तिनके संग अधिक छबि उपजत, कमलनैन मनिआरे।।
मानहु नील माट तें काढ़े लै जमुना ज्यों पखारे।
ता गुन स्याम भई कालिंदी सूर स्याम गुन न्यारे।।

संदर्भ-प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ सूरदास के भ्रमरगीतसार (सं.- आचार्य शुक्ल) से ली गई हैं।

यहाँ पर गोपियाँ उद्धव पर सीधा प्रहार करती हैं तथा योग का बहिष्कार करती हैं।

व्याख्या:- उद्धव को संबोधित करते हुए गोपियाँ कहती हैं कि ॐ वह मथुरा काजल की कोठरी है। वहाँ से जो भी आता है, वही काला हो। भँवरे, अक्रूर व तुम सभी काले हो। श्रीकृष्ण के सौंदर्य का वर्णन करते हुए गोपियाँ उनकी छवि का वर्णन करती हैं। उनके नयन कमल की भाँति हैं तथा यमुना किनारे रहने से श्रीकृष्ण के काया यमुना भी स्याम रंग से अभिभूत हो उन श्रीकृष्ण के गुण न्यारे हैं।

विशेष:-
1) उपालंभ काव्य का सुंदर उदाहरण।
2) भंवरे का प्रतीक वक्रता को तीव्रता प्रदान करता है।
3) 'काजर की कोठरि' मुहावरा शैली का प्रयोग
4) सूरदास की शब्द योजना भाव प्रवाह को तेजी प्रदान करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) जौ रोऊं तौ बल घटै, हँसौं तौ राम रिसाइ।
मनंही मांहि बिसूरणां, ज्यूँ घुँण काठहि खाइ।।

विरह कौ अंग

संदर्भ प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ कबीर के दोहों से संकलित हैं। इसका संकलन पं. श्यामसुंदरदास ने किया है।

यहाँ पर कबीर दुविधा में है की ईश्वर को कैसे मनायें।

व्याख्या:- कबीर कहते हैं कि रोने से बल घटेगा तथा हँसने से राम नहीं मिलेंगे। इस अवस्था में मन ही मन में घुटन हो रही है। इस स्थिति को दीमक के उदाहरण से समझा जा सकता है जो अंदर ही अंदर लकड़ी को खा जाता है।

विशेष:- 1) कबीर की निर्गुण भक्ति उजागर हुई है।
2) अनुप्रास अलंकार दोनों पंक्तियों में
3) लोकजीवन के उदाहरण का दर्शन से समन्वय (दीमक के द्वारा)
4) मुक्तक शैली व दोहा छंद
5) कबीर भाषा के डिक्टेटर हैं तथा अन्तर्मन की दुविधा को प्रभावशाली तरीके से कहते हैं।

5½/10


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) श्रेय नहीं कुछ मेरा,
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में–
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने,
सब-कुछ को सौंप दिया था–
सुना आप ने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का थाः
वह तो सब-कुछ की तथता थी
महाशून्य
वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन
सब में गाता है।

संदर्भ - प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रयोगवादी व नई कविता के पुरोधा 'अज्ञेय' की रचना 'आँगन के पार द्वार' की कविता 'असाध्यवीणा' से संकलित हैं।

यहाँ पर रचनात्मकता व सृजनशीलता के तीन तरीकों पर बल देते हुए स्वयं के समर्पण की बात कही गई है।

व्याख्या:- प्रियंवद कहता है कि मेरा कोई श्रेय नहीं, मैं तो स्वयं विस्मृत हो गया था। मैंने मौन होकर अपने आप को सौंप दिया था तथा आपको जो अनुभूति हुई वह वीणा या मेरा स्वर नहीं था।

वह महाशून्य व महामौन थी। यह आतंरिक चेतना थी सबकी जिसको विभाजित तथा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेलः helpline@groupdrishti.com, वेबसाइटः www.drishtiIAS.com
फेसबुकः facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटरः twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रवित नहीं किया जा सकता है अतः मौलिक साधना स्वयं के समर्पण से संभव है।

विशेष:- 1) अज्ञेय का अस्तित्ववादी व योगाचार विज्ञानवाद दर्शन दिखाई देता है।

2) छंदों की अनुपस्थिति परंतु आंतरिक लय विद्यमान है।

3) तत्समी भाषा सैद्धांतिक सूक्ष्म विवेचन के अनुकूल है।

साधक की विशेषता है पूर्ण समर्पण। यह आज के दौर की आवश्यकता है।

6/10



Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजियेः $10 \times 5 = 50$

(क) विपन्नता के इस अथाह सागर में सोहाग ही वह तृण था, जिसे पकड़े हुए वह सागर को पार कर रही थी। इन असंगत शब्दों ने यथार्थ के निकट होने पर भी, मानों झटका देकर उसके हाथ से वह तिनके का सहारा छीन लेना चाहा, बल्कि यथार्थ के निकट होने के कारण ही उनमें इतनी वेदना-शक्ति आ गई थी। काना कहने से काने को जो दुःख होता है, वह क्या दो आँखों वाले आदमी को हो सकता है?

सन्दर्भ-प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ कलम के सिपाही के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास 'गोदान' से उद्धृत हैं।
गोदान में धनिया के चरित्र व उसके पति के प्रति प्रेम को यहाँ व्यक्त किया गया है।

व्याख्या:-
धनिया गरीबी के जंजाल में सिर्फ होरी के सहारे ही अपना जीवनयापन कर रही थी धनिया को होरी के शब्दों से आघात पहुँचा। उसे डर लगा कि कहीं होरी चला गया तो कैसे वह पार लगायेगी। यथार्थ परिस्थितियाँ ही इसी डर का कारण थी इसका उदाहरण प्रेमचंद काने आदमी को उसकी आँख न होने के चिढ़ाने के माध्यम से देते हैं।

विशेष:- 1) प्रेमचंद सामाजिक यथार्थ को पारदर्शी तरीके से कहते हैं।
2) शब्दों के चयन तथा विराम चिह्नों द्वारा लंबा वाक्य भी भावपूर्ण व प्रभावशाली है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3) प्रेमचंद हिन्दुस्तानी भाषा में लिखते हैं।

यह पंक्तियाँ एक गरीब परिवार में व्याप्त असुरक्षा व डर की भावना को सामने लाती हैं। यह समस्या ग्रामीण भारत में ज्यों की त्यों विद्यमान है

5 1/2
10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों से छल-छल आँसू बहने लगे। वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछती, पर वे बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आये हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आँखें बन्द की, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ-प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ कहानीकार भीष्म साहनी की कहानी 'चीफ की दावत' से उद्धृत हैं।

यहाँ पर पर वृद्ध माँ की व्यथा का वर्णन है तथा उसके आंतरिक भावनाओं के बादलों की गर्जना सुनाई देती है

व्याख्या:- जब वह अपनी कोठरी के अन्दर आ गई तो उसकी भावनाएँ अनियन्त्रित हो गई उसने अपने आँसुओं को पोंछा, परंतु पुत्र के तिरस्कार से व्यथित माँ के लिए इससे बड़ा दुख और कुछ नहीं हो सकता। वह माँ ही है जो हर स्थिति में, रोते हुए भी अपने पुत्र के चिरायु होने की प्रार्थना करती है।

यह आँसु बरसात के पानी की भाँति अनवरत बह रहे थे तथा चाहकर भी नहीं रुक रहे थे।

विशेष:- 1) यह आधुनिक भारत की समस्या है। आज माता-पिता को त्यागकर शहरीकरण की अंधी दौड़ चल रही है।
2) प्रेमचंद ने 'बूढ़ी काकी' में प्रारंभिक प्रमाण


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस समस्या के दिये थे।

3) भाषा साधारण, किंतु शब्दों की अयुक्तता एक भाव-प्रवाह बनाती है जो पाठक को द्रवित कर देता है।

4) आँसुओं को बरसात के पानी की उष्मा

पंक्तियाँ प्रासंगिक हैं बदलते ~~से~~ रिश्तों व पारिवारिक समस्याओं के संदर्भ में।

6/10


Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) भविष्य की चिन्ता हमें कायर बना देती है, भूत का भार हमारी कमर तोड़ देता है। हममें जीवन की शक्ति इतनी कम है कि भूत और भविष्य में फैला देने से वह और भी क्षीण हो जाती है। हम व्यर्थ का भार अपने ऊपर लादकर रूढ़ियों और विश्वासों और इतिहासों के मलबे के नीचे दबे पड़े हैं, उठने का नाम ही नहीं लेते, वह सामर्थ्य ही नहीं रही। जो शक्ति, जो स्फूर्ति, मानव-धर्म को पूरा करने में लगनी चाहिये थी, सहयोग में, भाई-चारे में, वह पुरानी अदावतों का बदला लेने और बाप-दादों का ऋण चुकाने की भेंट हो जाती है और यह जो ईश्वर और मोक्ष का चक्कर है, इस पर तो मुझे हंसी आती है।

'गोदान'
प्रेमचन्द

सन्दर्भ-प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ भूत-भविष्य को छोड़कर वर्तमान पर बल देती हैं। यहाँ पर ईश्वर-मोक्ष को छोड़कर मानव-धर्म पर बल दिया है।

व्याख्या:- भविष्य की चिन्ता करने से कायरता जन्म लेती है तथा भूत की गलतियाँ हमारे को कमजोर कर देती हैं। इसलिए हमें मानव-धर्म अपनाना चाहिए तथा रूढ़ियाँ त्याग देनी चाहिए पुराने कर्जों व बदला लेने की प्रवृत्ति विनाशकारी है इसलिए ईश्वर व मोक्ष के प्रपंच को छोड़कर कर्म पर बल देना चाहिए।

विशेष:- 1) पंक्तियाँ ~~समाजवादी~~ साम्यवादी दृष्टिकोण को धारण करते हुए ईश्वर को नकारती हैं।
2) रूढ़ियों की अपेक्षा मानव-धर्म पर बल दिया है।
3) भाषा में एक आवेग है तथा लयात्मकता है। यह विचारोत्तेजक है।

पंक्तियाँ प्रासंगिक हैं क्योंकि समाज आज भी रूढ़ियों से ग्रसित है।

3/10


Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) धनिया यन्त्र की भांति उठी, आज जो सुतली बेची थी, उसके बीस आने पैसे लायी और पति के ठण्डे हाथ में रखकर सामने खड़े दातादीन से बोली-महराज! घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा। यही पैसे हैं, यही इनका गोदान है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ-प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ गोदान (प्रेमचन्द) उपन्यास से उद्धृत हैं।

यहाँ पर धनिया ~~अपनी~~ अपने पति की मृत्यु के उपरांत गोदान करती है।

व्याख्या:- प्रेमचंद ने धनिया के माध्यम से गोदान में अपना सृजनात्मक चिंतन दिखाया है। धनिया ने अपने पास जो पैसे है वे सारे पण्डित को दे दिये। धनिया में अब सामर्थ्य नहीं रहा लड़ने का। वह यांत्रिक होकर पैसे थमा देती है। यही गोदान का अंत है तथा गोदान की धनिया पछाड़ खाकर गिर जाती है।

विशेष:- 1) 'गोदान' शीर्षक की सार्थकता इन पंक्तियों से सिद्ध होती है।

2) 'गोदान' के माध्यम से प्रेमचंद ने व्यंग्य करके पाठक को उत्तेजित करने का प्रयत्न किया है।

3) सीधी, सरल व पारदर्शी भाषा। सटीक शब्दों द्वारा संप्रेषण।

5
10


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) जीना चाहते हो? कठोर पाषाण को भेदकर, पाताल की छाती चीरकर अपना भोग्य संग्रह करो; वायुमंडल को चूसकर, झंझा-तूफान को रगड़कर, अपना प्राप्य वसूल लो; आकाश को चूमकर, अवकाश की लहरों में झूमकर, उल्लास खींच लो।

सन्दर्भ-प्रसंग:- प्रस्तुत गद्यांश हजारी प्रसाद द्विवेदी के 'कुटज' निबंध से उद्धृत है।
इसमें अदम्य जिजीविषा का संदेश है।

व्याख्या:- प्रश्नवाचक शैली में द्विवेदी जी जीने की प्रेरणा कुटज वृक्ष से लेने को कहते हैं। वे कहते हैं। जीने की इच्छा अदम्य साहस से, पत्थर को चीरकर तथा तुफानों से निकलकर ली जा सकती है। अपने अधिकार को प्राप्त किया जा सकता है। आकाश की ऊँचाइयों को छुआ जा सकता है। अपने उल्लास को खींचकर हासिल करो।

आत्मपरक शैली

विशेष- 1) भाषा में ओज गुण है।
2) जीवन की सार्थकता कुटज वृक्ष से समझी जा सकती है।
3) द्विवेदी जी भाषा प्रश्नवाचक शैली में पाठक से संवाद करती है।

प्रस्तुत पंक्तियाँ जब मनुष्य अपने को भूलता जा रहा है तो आधुनिक युग में जीवन जीने की प्रेरणा कैसे लें यह सीख देती है।

6/10



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) तो क्या ये मेरे मोटे होने के दिन हैं? मोटे वह होते हैं जिन्हें न रिन का सोच होता है न इज्जत का। इस जमाने में मोटा होना बेहयाई है। सौ को दुबला करके तब एक मोटा होता है। ऐसे मोटेपन में क्या सुख? सुख तो जब है कि सभी मोटे हों।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ-प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ गोदान (प्रेमचन्द) उपन्यास से संकलित हैं।

यहाँ होरी अपनी गरीबी के कारण दुर्बलता को स्वीकार करते हुए दुखी है।

व्याख्या: होरी कहता है मेरी उम्र अब मोटा होने की नहीं है। मोटा वही हो सकता है जिसको आराम तथा इज्जत किसी की चिन्ता न हो। मोटा होना आज के दिन बेशर्मी है क्योंकि इसके लिए दूसरों का खून चूसना पड़ता है। इस तरह के मोटेपन से कोई सुख नहीं है। अंत में होरी कहता है सभी के मोटे होने से ही सुख है।

विशेष:- 1) यहाँ पर मार्क्सवादी दर्शन की झलक स्पष्ट है। समतामूलक समाज की चेष्टा की गई है।
2) होरी प्रश्नवाचक शैली का प्रयोग करता है।
3) संवाद शैली द्वारा साधारण, अनपढ़-आदमी की भाषा में विचार-प्रधान बात कही गई है।

यह पंक्तियाँ आज के भारत में भी प्रासंगिक हैं। स्वतंत्र भारत में होरी आत्महत्या करने पर मजबूर हो रहा है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) नारी के प्रति अनुराग से, उसके आश्रय की कामना से ही पुरुष उसे अधीन रख कर उसे आत्म-निर्भर नहीं रहने देता। नारी प्रकृति के विधान से नहीं, समाज के विधान से भोग्य है। प्रकृति में और समाज में भी स्त्री तथा पुरुष अन्योन्याश्रय हैं।

सन्दर्भ-प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रगतिवादी विचार-धारा के सशक्त हस्ताक्षर यशपाल के उपन्यास 'दिव्या' से उद्धृत हैं।

यहाँ पर मारिश के द्वारा नारी स्वतंत्रता के विचार यशपाल से जाहिर किये हैं।

व्याख्या:- पुरुष अपनी सेवा के लिए, उसे अनुराग का पात्र बनाकर, आश्रित बनाना चाहता है उसके अधिकार प्रकृति नहीं छिनती। इसके लिए सामाजिक व्यवस्था जिम्मेदार है मारिश कहता है नारी को पुरुष का आश्रय तथा पुरुष को नारी के आश्रय की आवश्यकता है इस प्रकार दोनों को बराबरी का अधिकार है तथा दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

विशेष:- 1) नारी-दर्शन की उदारता यशपाल के स्वतंत्रता की पूर्व-संध्या पर लिखे गये उपन्यास में
2) भाषा में लयात्मकता तथा काव्यभाषा का रसास्वादन है
3) तत्समी भाषा विचार प्रवाह में बाधा नहीं, बल्कि भावाभिव्यक्ति का माध्यम बनी है

पंक्तियाँ आज भी प्रासंगिक हैं। क्योंकि



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अधिकारों से वंचित हो यही भावना प्रसाद की इन पंक्तियों में –

"तुम भूल गये पुरुषत्व मोह में
कुछ सत्ता है नारी की"

6/10



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) अहंकारमूलक आत्मवाद का खण्डन करके गौतम ने विश्वात्मवाद को नष्ट नहीं किया। यदि वैसा करते तो इतनी करुणा की क्या आवश्यकता थी? उपनिषदों के नेति-नेति से ही गौतम का अनात्मवाद पूर्ण है। यह प्राचीन महर्षियों का कथित सिद्धांत, मध्यमा प्रतिपदा के नाम से, संसार में प्रचारित हुआ। व्यक्तिरूप में आत्मा के सदृश कुछ नहीं है। वह एक सुधार था, उसके लिये रक्तपात क्यों?

सन्दर्भ-प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ युगांतकारी नाटककार जयशंकर प्रसाद के प्रसिद्ध नाटक 'स्कन्दगुप्त' से उद्धृत हैं।

यहाँ पर धातुसेन बौद्धधर्म व वैदिक धर्म में सामन्जस्य पर बल देते हुए दोनों को ~~पूरक~~ पूरक बताते हैं।

व्याख्या:- गौतमबुद्ध ने ब्राह्मण धर्म के अहं आधारित आत्मवाद का विरोध करके बौद्ध धर्म स्थापित किया। परंतु उन्होंने विश्वात्मवाद को भी स्वीकार किया। इसलिए उनका उद्देश्य इसे सुधारने का था न कि नष्ट करने का। इसलिए करुणा का संदेश दिया। गौतम बुद्ध का अनात्मवाद उपनिषद दर्शन से ही प्रेरित है यही सिद्धांत ~~संसार में प्रचलित~~ संसार में मध्यम मार्ग नाम से प्रचलन में रहा। इसलिए इस सामाजिक सुधार के लिए रक्तपात छोड़कर सामाजिक समरसता पर बल दिया जाना चाहिए

विशेष:- 1) पंक्तियाँ प्रसाद के दर्शन के चिंतन का उदाहरण है। यहाँ आत्मवाद व अनात्मवाद का



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्णन किया गया है,

2) स्वतंत्रता आंदोलन के समय की सांप्रदायिकता को कम करने का प्रयास।

3) विचारों की गूढ़ता को ~~प्र~~ तत्समी भाषा से प्रदर्शित किया है

4) संवाद शैली

यह पंक्तियाँ आज भी आवश्यक हैं रोहिंग्या मुसलमान वर्मा में हिंसा का सामना कर रहे हैं। इस दर्शन से शांति का रास्ता तलाशा जा सकता है

6/10


Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) आज तक के वे भीतरी उबाल और बाहरी दबाव के बीच टुकड़े-टुकड़े होकर हमेशा घुटने ही टेकते आये हैं। हर बार दिनेश को लड़ाई के मैदान में ले तो जरूर गए हैं, पर जैसे ही गोलियाँ चली हैं, उसे वहीं छोड़कर भाग आये हैं- अकेला, निहत्था। वह गोलियों की बौछार से लहूलुहान होता रहा है और ये खुद एक असह्य अपराध बोध से। नहीं, और नहीं; अब तो वे चाहें तो भी शायद ऐसा नहीं कर सकते।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ-प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ राजनीतिक उपन्यास महाभोज (मन्नू-भण्डारी) से उद्धृत हैं।

यहाँ सक्सेना की आंतरिक स्थिति का वर्णन किया गया है। उनके अन्तर्द्वन्द को उभारा गया है।

व्याख्या:- • मि. सक्सेना ने दिनेश को 1952 की लड़ाई में खो दिया था। इसी स्मृति से बार-बार उनके मन में अपराध बोध आता है। उन्होंने हर बार समस्या के सामने घुटने टेके हैं। यह अपराध बोध उनको अंदर से प्रवित रहता है। दिनेश को गोलियों के सामने छोड़कर आना उनके लिए बिंदा की सहायता करने का प्रेरणा बनता है।

विशेष :- 1) पंक्तियाँ अन्तर्द्वन्द्व की सघनता व गहराई को व्यक्त कर रही हैं।
2) भाषा सीधी, सहज है परंतु शब्द-चुनाव उत्कृष्ट होने से प्रभावोत्पादक है।
3) 'घुटने टेकना'- मुहावरा शैली का प्रयोग
यह पंक्तियाँ आज भी भ्रष्टाचार को देखकर उनका



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

विरोध न करने वालों को उद्वेलित करने का प्रयत्न करती हैं।

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) पंडित ने रस्सी निकाली। उसका फंदा बनाकर मुरदे के पैर में डाला और फंदे को खींचकर कस दिया। अभी कुछ-कुछ धुँधला-सा था। पंडित जी ने रस्सी पकड़कर लाश को घसीटना शुरू किया और गाँव के बाहर घसीट ले गए। वहाँ से आकर तुरंत स्नान किया, दुर्गापाठ पढ़ा और घर में गंगाजल छिड़का।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ एक धार्मिक वातावरण का वर्णन कर रही हैं। यहाँ एक मृत शरीर से किस तरह भावना-विहीन व्यवहार किया है उसका वर्णन है।

व्याख्या:- पंडित ने रस्सी से बाँधकर मुरदे को घसीटा तथा गाँव के बाहर ले जाकर छोड़ दिया। गाँव के बाहर छोड़कर स्नान किया तथा दुर्गापाठ किया। इसके बाद घर में गंगाजल छिड़का।

इस प्रकार * गद्यांश मानव की अपेक्षा रीति-रिवाजों को अधिक महत्व देने पर व्यंग्य करता है।

विशेष:- 1) भाषा व्यंग्यात्मक व प्रतीकात्मक है।

2) साधारण शब्दों व सहज रूप से वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।

3) बिंबधर्मी भाषा एक चित्र उपस्थित करती है।

5/10


Copyright – Drishti The Vision Foundation